

आलीज



पृष्ठ 3 : फ्ट पर विशेष

पृष्ठ 6 : लेनोवो डील

पृष्ठ 7 : पानी की समस्या

फण्डा कॉर्नर

जिमखाना की शुरुआत पटेल छात्रावास के कम न. A-201 से हुई थी, जो कमशाः स्थानांतरित होते हए पहले IOSYS और फ़िरअपने वर्तमान स्थान तक पहुँचा। और इसे पहले 'सर ज्ञान चन्द्र घोष मेमोरियल स्टुडेंट सेन्टर' के नाम से जाना जाता था !!

मचा दिए गुरू

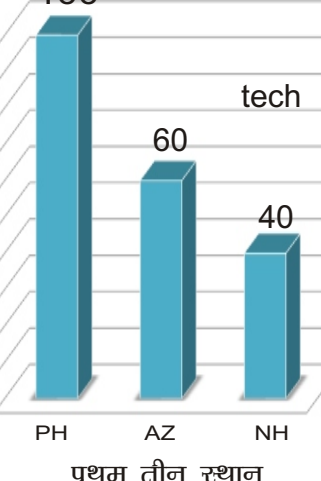
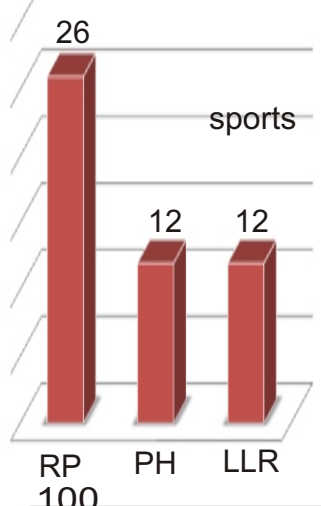
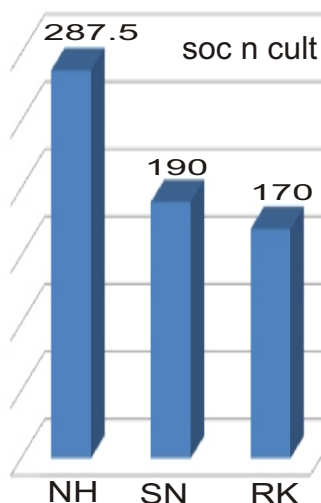
"Its better to have brain drain than brain in drain"

Alumni Meet में अपने भाषण के दौरान एक Alumni

GC



मीटर



प्रथम तीन स्थान

डॉ कलाम बने ऑनररी प्रॉफेसर



शनिवार 12 जनवरी का दिन संस्थान को इस नव वर्ष का एक खूबसूरत तोहफा दिया गया जब पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अपने व्यस्त कार्यक्रम से थोड़ा समय निकाल कर यहाँ आए। हालाँकि समय के आभाव में वे हमारे साथ ज्यादा वक्त नहीं गुज़ार पाए परन्तु ऐसी हस्ती के साथ गुज़ारा गया एक लम्हा भी छात्रों को प्रेरित करने के लिए काफी है। संस्थान के छात्रों, शिक्षकों और इन सब से बढ़कर स्कूली बच्चों के दिल में "चाचा कलाम" के लिए क्या जगह है यह सर्वविदित है और इसी का नज़ारा हमें तब मिला जब शनिवार की सुबह भी उनकी झलक पाने के लिए लोगों का तांता लगा हुआ था।

डॉ कलाम ने 2020 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की कोशिश में हम सबके योगदान के महत्व को समझाया। साथ ही उन्होंने इसबार भी बल दिया कि केवल आर्थिक विकास हमारे देश में खुशहाली नहीं ला सकता, हमें ज़रूरत है लोगों के मनमस्तिष्क में मूल्यों के स्थापना की। उनके शब्दों में -

"Righteousness of mind leads to beauty in the character
Beauty of the character leads to harmony in the home
Harmony in the homes leads to order in a nation
Order in a nation leads to peace of the world "

अर्थात् विश्वशांति की शुरुआत मन की पवित्रता और सत्यनिष्ठा से ही संभव है। मन की सत्यनिष्ठा ही कमशाः आचरण की सुंदरता, घर की खुशहाली, राष्ट्र में सुव्यवस्था तथा विश्व की शांति की ओर ले जाती है। डॉ. कलाम ने कहाँ 2020 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का अपना दस सूत्री लक्ष्य पेश किया वहीं छात्रों तथा सभा में मौजूद शिक्षकों के साथ इस लक्ष्य को पूरा करने की शपथ भी ली। जातेजाते वो हमें नए साल की एक और सौगात दे गए जब उन्होंने संस्थान के "ऑनररी प्रॉफेसर" बनने के निदेशक महोदय के आग्रह को स्वीकार किया। अब IIT खड़गपुर के छात्रों को भी कभी-कभी उनसे व्याख्यान सुनने का सौभाग्य प्राप्त होता रहेगा। हम पूरे संस्थान की ओर से डॉ. कलाम को धन्यवाद देते हैं तथा आशा करते हैं कि वे ऐसे ही सभी को एक मज़बूत राष्ट्र के निर्माण की प्रेरणा देते रहेंगे।

Inter IIT 07 : एक रिपोर्ट



वर्ष 2007 की Inter IIT Sports Meet हाल ही में IITB में संपन्न हुई। यह इसलिए खास थी कि वर्ष 2007 IITB का 50वीं वर्ष गाँठ का वर्ष रहा। इस अवसर को और सुनहरा बना दिया IITB के Men's General Championship की जीत ने। मज़ेदार बात यह है कि अगले साल के Sports meet के मेज़बान और अपनी 50वीं वर्षगाँठ मना रहे IITM ने Women's General Championship को जीत कर अगले साल के लिये अपनी जीत की दावेदारी को खासा मज़बूत कर दिया है।

KGP के लिये ये MEET थोड़ी निराशाजनक रही। जबकि KGP पुरुषवर्ग में पाँचवी स्थान पर रहा वहीं KGP महिलावर्ग में दूसरे स्थान पर रहा। KGP ने महिला तैराकी में स्वर्ण जीता। KGP ने महिला एथलेटिक्स और पुरुष बैडमिंटन तथा तैराकी में रजत पदक एवं पुरुष बास्केटबॉल, क्रिकेट, वॉटरपोलो और भारात्तोलन में कांस्य पदक अर्जित किए।

14 से 21 दिसंबर तक के 8 दिन के अंतराल में संपन्न हुई इस Sports Meet का उद्घाटन समारोह 15 दिसंबर को हुआ। मुख्य अतिथि धनराज पिल्ले इस कार्यक्रम के खास आकर्षण रहे। इसके अलावा समारोह में योगा और मलखांब के कई कार्यक्रम भी आयोजित किये गये। आयोजक होने का लाभ लेने वाला IITB ही पूरी meet पर छाया रहा।

इस वर्ष की Sports Meet अत्यंत विवादित रही। G.Sec.

Sports (Gymkhana) देवाशिष सारंगी के अनुसार IITB से जो आशाएँ की जा रही थी उसपर वे खरे नहीं उतरे। रहनेखाने का इंतज़ाम कुछ खास नहीं था। अभ्यास के लिए जो समय निर्धारित किया गया था वह भी उपयुक्त नहीं था। बैडमिंटन में हमेशा इस्तेमाल होने वाले यूनिक्स शटल की जगह निचले दर्जे के शटल इस्तेमाल किये गये। इन नये शटल से अभ्यास करने में खिलाड़ियों को खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। रेफरी के निर्णय भेदभावपूर्ण होने की भी काफी शिकायतें आई हैं।

Meet में ऐसी कई घटनाएँ घटित हुई जिनसे कई बवाल खड़े हुए। धनराज पिल्ले जी ने अपने उद्घाटन भाषण में ही IITB को विजेता बनाकर उन्हें बधाई दे डाली। हद तो तब हुई जब IITB और IITM के मध्य खेले गए बास्केटबॉल के फाइनल के शुरू होने से पहले ही स्कोरबोर्ड पर IITB को पूरे 10 अंक प्रदर्शित कर दिए गए। बास्केटबॉल के मैचों को भी निर्धारित क्रमानुसार नहीं रखा गया।

Inter IIT के लिये अच्छी तैयारियाँ करने के बावजूद भी KGP अपेक्षानुसार प्रदर्शन नहीं कर पाया। इसको ध्यान में रखते हुए अगले Inter IIT के लिये अभी से तैयारियाँ शुरू कर दी गई हैं। Inter IIT अभ्यास का पहला चरण अगले सेमेस्टर की बजाए इसी सेमेस्टर में शुरू करने के बारे में सारंगी सोच रहे हैं। इसी सेमेस्टर में कप्तानों की नियुक्ति पर भी वे विचार कर रहे हैं।

कुछ भी हो प्रथम वर्ष के छात्रों के लिये यह एक अविस्मरणीय अनुभव था। जाते वक्त पूरे उत्साह और धूम के साथ जाने वाली Kgp की

टीम आते वक्त थोड़ी शांत लग रही थी पर इस शांति में सबके मन में अगले Inter IIT में अच्छा करने का निश्चय था।



Alumni Meet पर विशेष

इस वर्ष पंचम वार्षिक Alumni Meet 5-6 जनवरी को सम्पन्न हुई। इसमें सन् 1958 और 1983 में जिन Alumni ने IIT KGP से डिग्री प्राप्त की थी उन्हें विशेष रूप से समारोह में आमंत्रित किया गया था परन्तु संस्थान के Alumni कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं, इसकी जानकारी के अभाव में आशानुरूप वृहद कार्यक्रम नहीं हो पाया जो कई Alumni के व्यथा का कारण भी बना।

संस्थान के undergraduate कार्यक्रम की लगभग सभी ने जहाँ सराहना की वहीं PhD और postgraduate कार्यक्रम की गुणवत्ता विश्व के अगसर संस्थानों के बराबर नहीं होने पर खेद भी प्रकट किया। शोध कार्यक्रम हेतु धन की कमी, उत्कृष्ट प्रयोगशालाओं का अभाव, faculties को दिया जाने वाला अनाकर्षक न्यून वेतन और शोध छात्रों में गुणवत्ता की कमी को इसका कारण बताया गया।

IIT-D के निदेशक और IIT Kgp के पूर्व छात्र डॉ सुरेन्द्र प्रसाद ने इसके लिए Alumni से आग्रह किया कि वे नवयुवक प्राध्यापकों को आकर्षित करने हेतु कोष का निर्माण करें। उन्होंने बताया कि उनके निर्देशन में ऐसे ही एक

कोष Outstanding Young Fellowship (OYF) की स्थापना IIT-D में की गई है जिसके माध्यम से सरकारी मानक से 10-15 हजार अधिक मासिक वेतन संकाय सदस्यों को दिया जा रहा है। उनका कहना था कि संस्थान को सरकार से काफी धन मिलता है जिसे सरकारी दायरे में ही व्यय करना पड़ता है, लेकिन Alumni से मिलने वाले धन में ऐसी कोई बंदिश न होने के कारण उनका धन कई बार ज्यादा उपयोगी सिद्ध होता है।

शोध कार्यों में धन की कमी को दूर करने के लिए डॉ बालाचंद्रन ने सलाह दी कि

डॉ.रॉन गुप्ता ने कहा कि Alumni आधारभूत सुविधाएँ जैसे Airports, Highways इत्यादि के निर्माण को प्रायोजित कर सकते हैं। उन्होंने School of Infrastructure Design and Management के लिए संस्थान को \$1 million दिए हैं।

छात्रों को फीस में दी जाने वाली subsidy न देकर उन्हें संस्थान बिना subsidy के फीस जमा करने के लिए बैंकों के माध्यम से लोन दिलवाए, जिससे छात्र पढ़ाई खत्म होने के उपरांत मात्र 6 माह की नौकरी से लोन चुका सकें, जिससे न धन की कमी होगी न ही छात्रों पर बोझ पड़ेगा।

इसके अलावा विश्व की श्रेष्ठ प्रयोगशालाओं से शोधकर्ताओं को आमंत्रित कर शिक्षकों और छात्रों से वार्तालाप कराने का भी सुझाव सामने आया। इस पक्ष पर जोर डाला गया कि सर्वश्रेष्ठ प्रोफेसर्स को केवल धन आकर्षित करने में सक्षम नहीं हैं अपितु उन्हें आकर्षित करने के लिए विश्वस्तरीय प्रयोगशालाओं का होना भी आवश्यक है। डॉ कौर ने गुणी शोध

आवाज़ टीम द्वारा Alumni से Alumni meet की व्यवस्था संबंधी प्रश्नों के उत्तर में अधिकतर ने इसकी सराहना की। उन्होंने जहाँ ठहरने और भोजन संबंधी व्यवस्था को संतोषप्रद बताया वहीं वाहन संबंधी व्यवस्था में सुधार की संभावनाओं की ओर ध्यान आकर्षित कराया। सन् 1956 बैच के पटेल छात्रावास के श्री पंकज घोष ने इस समारोह में धन की कमी के कारण होने वाली समस्याओं की ओर इशारा करते हुए इसे प्रायोजित कराने की सलाह दी।

एक दूसरे Alumni से CGPA और EAA संबंधी पूछे गए सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षा हेतु CGPA छात्रों के लिए काफी सहायक तो होता है लेकिन सर्वांगीण विकास के लिए सिर्फ CGPA परिपूर्ण नहीं है। Management, Law, Medical तथा Economics आदि नए विषय IIT जैसे प्रौद्योगिक संस्थान में पढ़ाए जाने पर उन्होंने इसे संस्थान को विश्वविद्यालय बनाने की ओर बढ़ता कदम बताया और कहा कि कुछ वर्षों में ही इस संस्थान की गिनती विश्व के श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में हो सकती है क्योंकि इसका विकास दर काफी उच्च है।

छात्रों को प्रोत्साहित करने पर भी काफी बल दिया। लगभग सभी का मतव्य था कि धन की पूर्ति कर, गुणी शोध छात्रों को आकर्षित कर तथा विश्वस्तरीय प्रयोगशाला का निर्माण कर हम अपने संस्थान को विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्थान बना सकते हैं।

सभी Alumni संस्थान को बड़ी धनराशि देने में सक्षम नहीं हैं, अतः एक Alumnus ने संस्थान को छोटी राशि हेतु Alumni को प्रोत्साहित करने की सलाह दी। Alumni धन ही नहीं बल्कि अपने और अपने कार्यस्थल के माध्यम से भी संस्थान की मदद कर, संस्थान का नाम आगे बढ़ाकर गुणी शोध छात्रों और अग्रण्य प्रध्यापकों को संस्थान की ओर आकर्षित कर सकते हैं। संस्थान से Alumni के संबंध को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए Alumni संबंधी जानकारी को इकट्ठा कर एक CEO नियुक्त करने का प्रस्ताव भी कार्यक्रम में रखा गया। इन कमियों को दूर करने हेतु छात्रों और Alumni के बीच interaction को बढ़ाने का मतव्य सामने आया।

अपने कार्य से संतुष्ट हैं VP

जिमखाना VP के पद पर मैं अब तक के अपने काम से काफी हद तक संतुष्ट हूँ। VP बनने के पीछे मेरे कुछ उद्देश्य थे। इनमें मैं समझता हूँ कि सबसे महत्वपूर्ण स्थान पर प्लेसमेंट था। मुझे खुशी है इस बात की कि इस बार काफी अच्छा प्लेसमेंट हुआ। जिमखाना में सुधार लाना भी मेरा एक उद्देश्य था।

1) हाल ही में जो प्लेसमेंट हुए हैं उनके बारे में क्या कहना है?

उत्तरः मेरी प्राथमिकता प्लेसमेंट ही रही है। इस बार IITs में प्लेसमेंट कम होने का कारण ये था कि Recruitment के लिए कम्पनियों कम आईं लेकिन खड़गपुर और बम्बई पर इस बात का कोई फर्क नहीं पड़ा। KGP प्लेसमेंट के मामले में द्वितीय स्थान पर है।

2) आपके कार्यकाल में जिमखाना में क्या-क्या सुधार किए जा रहे हैं?

उत्तरः पिछली बार social & cultural events के साथ-साथ होने से छात्रों को काफी असुविधा हुई थी। अधिकारियों से बात करने से इसका हल निकल पाया है। कुछ इवेंट्स की घटती लोकप्रियता

को देखते हुए उन्हें हटा दिया गया और हरेक दो इवेंट्स के बीच पर्याप्त समय रखा गया है। illu के नियमों के निर्धारण में सारे हॉल्स के प्रतिनिधि मौजूद थे। इस कारण illu के परिणामों से KGP के छात्र संतुष्ट थे। IIT मद्रास की तर्ज पर guidance counselling के लिए Apping Cell स्थापित करने का विचार है। मगर इसकी स्थापना में कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। ये Cell किस तरह से काम करता है इसको पता करने के लिए एक कमेटी बन चुकी है। हमारी कोशिश रहेगी कि IIM के प्रोफेसर्स से बात की जाए और Apping Cell के SOP पता किये जायें। इसमें थोड़ा समय लग सकता है अतः इसके परिणाम देखने में वक्त लगेगा। मेरा वादा है कि इस दिशा में काम जारी रहेगा।

GSecs के कार्यकाल का लेखा-जोखा

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि जिमखाना IIT खड़गपुर का महत्त्वपूर्ण अंग है। जब हमारी टीम आवाज़ जिमखाना के जनरल सेक्रेटरी, Soc n cult के पास साक्षात्कार के लिए पहुँची तो कुछ प्रमुख तथ्य सामने आए। अगर शुरूआत उनके प्रस्तावों से करें तो वे कुछ इस प्रकार से थे :

1 Events में भाग लेने वाले छात्रों का कम्प्यूटराइज्ड डाटाबेस तैयार करना।

2 विजेताओं को प्रमाणपत्र शीघ्र उपलब्ध कराना।

3 फाइन आर्ट्स की वर्कशॉप करवाना।

4 सारे events को अच्छी तरह सम्पन्न करना एवं उनके संचालन में होने वाले गड़बड़ी को दूर करना।

5 Star-night के लिए ज्ञान घोष स्टेडियम का इस्तेमाल।

अपने प्रस्तावों को पूरा करने में वे कितना सफल होते हैं ये तो इस सेमेस्टर के अन्त में ही पता चलेगा। अभी तक कुछ ठोस कदम देखने से हम वंचित रहे हैं पर आशा है कि ये प्रस्ताव सिर्फ प्रस्ताव बनकर न रह जाएँ। उनके कथनानुसार विभिन्न events में भाग लेने वाले छात्रों के records कम्प्यूटराइज होने लगे हैं, हर event का एक सॉफ्ट कॉपी डाटाबेस बनाया जा रहा है पर इसके लागू होने का छात्र अभी तक

इंतज़ार ही कर रहे हैं। ड्रामैटिक्स के वर्कशॉप की सफलता या असफलता का सीमांकन आप ही कर ही सकते हैं। फाइन आर्ट्स की वर्कशॉप उनके कथनानुसार आर्थिक दिक्कतों के कारण नहीं हो पायी। ज्ञान घोष स्टेडियम में Star-night कराने के प्रस्ताव पर भी सुरक्षा कार्यों से अंकुश लगा दिया गया है।

साक्षात्कार के कुछ महत्वपूर्ण अंश इस प्रकार हैं :

प्र : Soc n cult events की संख्या में कमी करने का क्या कारण है?

उ : Events के सही ढंग से संचालन एवं अच्छे प्रबंधन हेतु।

प्र : नए Deans एवं Director महोदय के आगमन से आपके कार्य पर क्या प्रभाव पड़ा है?

उ : कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। नए जिमखाना प्रेसिडेंट काफी supportive हैं।

प्र : अभी तक के कार्यकाल में किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा?

उ : इस वर्ष मुख्य समस्या निधि की रही है। Soc n cult टीम को पिछले वर्ष की तुलना में कम निधि प्राप्त हुई है जिसके कारण काफी प्रस्ताव रूके पड़े हैं। फाइन आर्ट्स की वर्कशॉप के न होने का कारण भी यही है।

छात्रों के लिए संदेश :

Soc n cult कार्यक्रम में अपना सहयोग दें, कार्यक्रमों में अव्यवस्था न फैलाएँ। इस वर्ष Spring-fest कुछ अलग रहेगा और आप लोगों के लिए कुछ नए अनुभव इंतज़ार में हैं।

मधुमक्खियों का आतंक

जनवरी 8, 2008 स्थान विद्यासागर छात्रावास के सामने; समय दोपहर के 1:30 से 3:30 : राहगीरों के इंतज़ार में बैठी मधुमक्खियाँ। मिशन एक ही था उनपर टूट पड़ना। इसकी पड़ताल करने हमारी आवाज़ टीम पहुँची। ज्ञात जानकारी के अनुसार हमें पता चला है कि इस प्रकार की घटनाओं का वर्ष में दो से तीन बार होना स्वाभाविक है। वर्ष का यह समय उनका breeding season होता है। अगर कोई भी पक्षी या अन्य उनके छत्ते को नुकसान पहुँचाने की कोशिश करता है तो वे अपने घर को बचाने के लिए आसपास के जीवों पर आक्रमण कर देती हैं।

कर्मचारियों से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस दिन मधुमक्खियों के हमले से पीड़ित लगभग 40 से 45 लोग अपना उपचार कराने के लिए B C Roy चिकित्सालय पहुँचे जिनमें से कुछ की हालत गंभीर थी। 4-5 लोगों को उपचार के लिए मर्ती भी होना पड़ा।



झूम बराबर झूम

फेस्ट - नाम सुनते ही मन में उमंगें जाग उठती हैं, दिल हिचकोले खाने लगता है। फेस्ट का नाम सुनते ही फच्चे सपनों में खो जाते हैं। चलिये जानते हैं ये अपने ख्वाबों की उड़ान में कहाँ से कहाँ तक पहुँच जाते हैं। आप तो जानते ही होंगे कि KGP में दो खास प्रजातियाँ पाई जाती हैं मग्नू एवं भाटू। आओ देखें उनका टेपो -

म ॰ आया जो Spring Fest यार, मन में बजी गिटार, तू भी चल यार।

म ॰ अरे यार पहला सेम तो बीत गया, S.G. आ गई और प्रॉफ ने पहले ही बैड बजाकर रखा है।

म ॰ ज़रा कमरे से बाहर निकल, कैम्पस में बहार आई है।

म ॰ चल ठीक है, वैसे भी मैं 10 घंटे पढ़कर बोर हो गया हूँ। ब्रेक ले लूँ कुछ देर।

(बाहर जाकर)

म ॰ अरेरेरेरे ये KGP ही है क्या ? अबे pizza hut, Mc donalds और ये क्या pink floyd live.....

कहीं मैं मरकर जन्नत में तो नहीं आ गया !!

म ॰ अभी तो आगेआगे देख, होता है क्या। अच्छा तू आज frolicoholic में हिस्सा तो ले रहा है ना ?

म ॰ ना यार कहाँ मैं और कहाँ ये सब। मुझे कुछ नहीं आता।

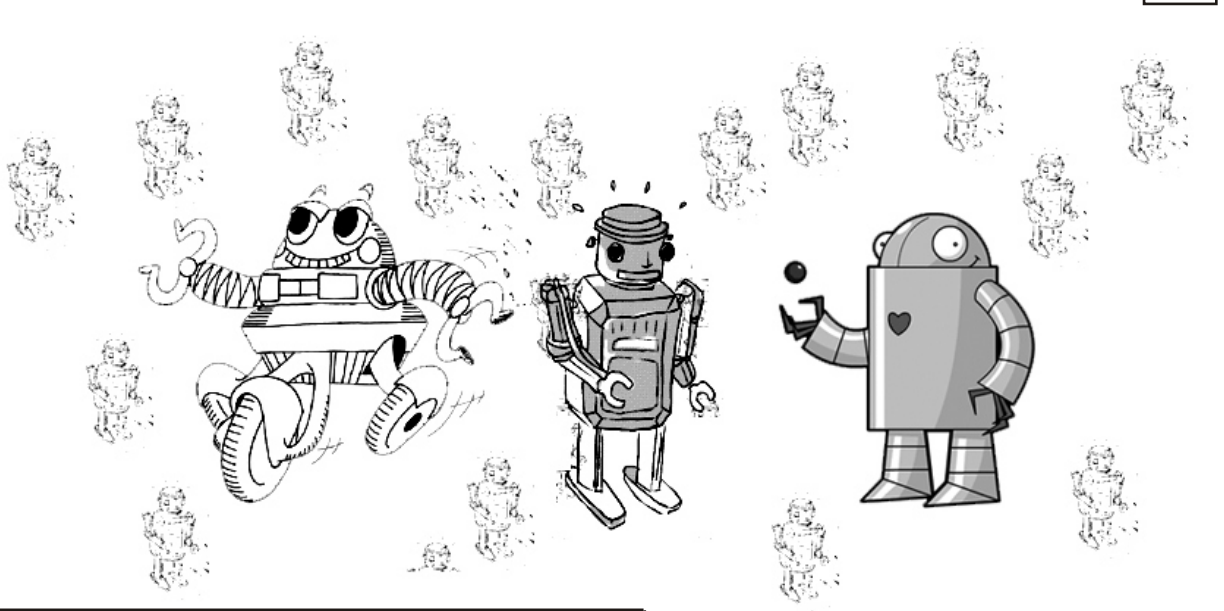
म ॰ अरे यार peace मार। जब मैं हूँ तब काहे का load? बस टेम्पो होना चाहिए।

तो इस तरह मग्नू तक पढ़ना लिखना भूलकर peace मारना है।



यहाँ आने से पहले बहुत सुना था कि यहाँ पढ़ने वाले सारे छात्र अपनी पढ़ाई के दौरान ही विदेश घूम के आ जाते हैं। हमने भी इसी से प्रभावित होकर JEE की तैयारी करने की ठानी। सोचा कि जल्दी से जल्दी IIT चले जाएँ ताकि हमें भी विदेश जाने का सौभाग्य मिले। बचपन से ही हवाई जहाज़ में चढ़ने का बड़ा शौक था। अपने सपनों को पूरा करने के लिए लग गए तैयारी में। हम गणित के सवाल बनाते हुए विदेश में होने वाले व्यय का अनुमान लगाते थे। वहीं भौतिकी शास्त्र के प्रश्नों का हल निकालते हुए वायुयान की गति एवं प्रक्षेपण कोण निकाला करते थे। रसायन शास्त्र पढ़ते हुए विदेशी जलवायु की रासायनिक संरचना की गणना किया करते थे। सपने में खुद को फ़िरंगियों के साथ तस्वीरें खिंचाते हुए देखा करते थे। देखते थे कि अम्मा-बाबा गर्व से पड़ोसियों और रिश्तेदारों के सामने अपने सपूत की तारीफ पर तारीफ किए जा रहें हैं। जवाब में उनका चेहरा देखने लायक होता था।

मन में दृढ़ता थी और आँखों में सपने। इतनी बड़ी प्रेरणा थी तो पास कैसे नहीं होते। हम भी पहुँच गए अपने सपनों की नगरी IIT में। यहाँ का तो नज़ारा ही कुछ और था। हमें क्या पता था कि विदेश जाने के लिए इतनी जद्दो-जहद



और इस तरह मग्नू और भाटू दूरियाँ कम कर खो गए S.F. के जादू में।

S.F. जो आया, कैम्पस तो नये ही form में दिख रहा है। D-team ने तो कैम्पस को किसी सुंदर सपने से भी अच्छा सजाया है। देर रात तक चलने वाले discotheque और rock events ने तो समा बाँध रखा है। दिन में तरहतरह की प्रतियोगिताएँ तो रात में Starnites। सबकी निंदिया रानी ने तो आँखों को छोड़ कहीं और बसेरा बना लिया है। चूँकि कहते हैं कि हँसने से सेहत अच्छी रहती है इसीलिए हमारी जनता के लिए खास हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया है। Couples की तो बल्लेबल्ले हो गई salsa workshop जो लगी है। भेजा खाने वाले मखाऊ लोगों के लिए journalism की workshop एक वरदान है। Sculpture classes में पत्थरों की तो वाट लग गई है।

बाहर की बंदियाँ आने से बंदों की तरसती आँखों में चमक आ गई है। TDS के कार्यक्रमों ने हर किसी पर ऐसा जादू किया कि बस लोग अपने स्थानों पर ही थिरकने लगे। संगीत, अंताक्षरी तो जैसे आम बात हो गई है। हर गली में कहीं नुक्कड़ तो कहीं सरगम, बस हर तरफ नाचने गाने का ही माहौल है। बाहर वाले अक्सर हम IITians को मग्नू, किताबी कीड़े समझते थे पर हमारा sf देख कर वे भी समझ गए होंगे कि हम किस खेत की मूली हैं। कभी-कभी तो यह सब एक सपने सा लगता है पर डर भी लगता है कि कहीं ऐसा ना हो कि हमारी नींद खुले और यह सचमुच का एक सपना ही हो.....।

हम तो चले परदेस...



करनी पड़ेगी। महीनों बैठ कर प्रोफेसरों को मेल मारने होंगे। इतने नीरस और पकाऊ काम ने हमारे सपने को झकझोड़ा ज़रूर पर तोड़ नहीं पाएँ। हमें अपनी मंजिल साफ दिखने लगी

सुनहरे क्षितिज की तलाश में

IIT खड़गपुर के वार्षिक Techno-Management उत्सव 'क्षितिज' में अब बस कुछ ही दिनों की देर है। ऐसे में सभी लोगों में उत्साह देखा जा सकता है। परंतु विशेषतः प्रथम वर्षीय छात्रों के लिए जिन्होंने पहले कभी भी एक College Fest का अनुभव नहीं किया है, यह एक सुनहरा मौका होगा।

क्षितिज का नाम सुनते ही दिमाग में बड़े बड़े Robots आ जाते हैं और नवीनतम तकनीकों तथा Management Gurus का ख्याल आता है। ज़ाहिर सी बात है कि प्रथम वर्षीय छात्रों में इस वर्ष की प्रतियोगिताओं में भाग लेने की होड़ अविश्वसनीय है। प्रथम वर्षीय छात्र यह चाहते हैं कि वो भी क्षितिज के साथ जुड़ी तकनीकों तथा नवीन प्रक्रियाओं की प्रतिष्ठा का एक हिस्सा बन सकें। क्षितिज के स्तर की प्रतियोगिता का अनुभव बहुत ही कम प्रथम वर्षीय छात्रों को है और Robotics जैसे विषयों का craze आज देखते ही बनता है। ऐसे में First years की उम्मीदें क्षितिज से बढ़ती ही जा रही हैं। क्षितिज की hype को प्रथम वर्षीय जनता ने यथारूप स्वीकार कर लिया है। उनका मानना है कि Kshitij उनके लिए एक बेहद यादगार और कामयाब उत्सव होगा। उन्हें लगता है कि एक IITian होने के नाते उनका यह फर्ज़ बनता है कि वे जटिल से जटिल मशीनों का निर्माण करें तथा corporate दुनिया की उतार चढ़ाव को चखें। प्रथम वर्षीय छात्रों के लिए क्षितिज नाम कमाने का तथा आकर्षक पुरस्कार जीतने का टिकट भी है। वे यह उम्मीद रखते हैं कि Kshitij की कोई महत्त्वपूर्ण प्रतियोगिता जीतकर वे पूरे College में अपनी धाक जमा लें। जो कल तक Fundae लेते थे विजेता बनके अब वे Fundae देंगे!! देखने की बात यह होगी क्षितिज प्रथम वर्षीय छात्रों की इन सदा बढ़ती हुई उम्मीदों पर खरा उतरता है या नहीं।

थी पर रास्ता कठिन था।

एक दोपहर हम जब सो कर उठे तो अपने कम्प्यूटर स्क्रीन पर एक सकारात्मक जवाब देखा। हमें अपने आँखों पर यकीन नहीं हो रहा था। जापान टेकनिकल स्कूल के प्रो.नाओकी नाओमी हवाई यात्रा खर्च के साथ 4000 जापानी डॉलर देने को राज़ी थे। हमारी खुशी का ठिकाना नहीं था। बचपन के सपने फिर हमारी आँखों के सामने चक्कर काटने लगे। हमसे रहा न गया। दोस्तों को खुशखबरी सुनाने के लिए हमने जैसे ही खड़ा होना चाहा हम बिस्तर से गिर पड़े। हमारा सपना टूट गया था और हम वापस से हकीकत में आ चुके थे।

पर कोशिशें आज भी जारी हैं, और हमें पूरा विश्वास है कि हम अपने IIT में आने को व्यर्थ नहीं होने देंगे। आज नहीं तो कल हमें भी कोई सकारात्मक जवाब ज़रूर आएगा और हम हवाई जहाज से विदेश ज़रूर जाएंगे। वैसे भी कहानी के एन्ड तक सब ठीक हो ही जाता है। और अगर सब ठीक न हो तो वो दि एन्ड नहीं। पिव्चर अभी बाकी है मेरे दोस्त!

बात संपादक की

नये साल के इस प्रथम अंक में सबसे पहले तो सभी पाठकों को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ। बीते वर्ष की अगर बात करें तो ऐसी अनेक घटनाएँ रही जिनका वर्णन आवश्यक है। जहाँ 50 ओवरों के विश्वकप में जल्दी विदाई के बाद 20-20 विश्वकप में भारत ने विजय का परचम लहराया, वहीं एशिया कप और नेहरू कप जीत कर हॉकी तथा फ़ुटबॉल टीमों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। साल भर जहाँ लोग टाटा के लाख रुपये की कार का इंतज़ार करते रहे वहीं यह साल सैंसेक्स के 20000 अंकों तक पहुँचने की एक अज्ञात खुशी भी दे गया (यहाँ अज्ञात इस लिए कहा जा रहा है क्योंकि सैंसेक्स के 20000 छू लेने से फायदा क्या है ये अधिकांश लोगों को ज्ञात नहीं था, लेकिन इस घटना से खुशी सबको हुई)। राजनीति के क्षेत्र में एक तरफ़ देश को पहली महिला राष्ट्रपति मिली तो दूसरी ओर कर्णाटक में राजनीतिक अवसरवादिता की मिसाल कायम की गई। राहुल गाँधी मुख्य सचिव बनकर जहाँ कांग्रेस के शीर्ष की ओर एक और कदम बढ़ा गये वहीं नरेन्द्र मोदी ने बागियों और विरोधियों के पुरजोर प्रयासों के बावजूद भारी बहुमत लाकर यह सिद्ध कर दिया की गुजरात में उनका फ़िलहाल कोई विकल्प नहीं है। गुजरात, हिमाचल तथा उत्तराखंड में तो राम - राम करते भरतीय जनता पार्टी ने अपने झंडे गाड़ दिए, परन्तु इस साल खुद भगवान राम के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लग गए।

अन्तराष्ट्रीय मंच पर देखें तो जहाँ भारत और चीन विश्व पटल पर अपनी शाख में इज़ाफ़ा करते गए, वहीं पाकिस्तान मुशर्रफ़-काल में अपने अस्तित्व को बचाने में जूझता रहा। आपातकाल का लागू होना अपने-आप में लोकतंत्र की स्थापना के लिए एक बड़ी रुकावट थी और बेनज़ीर भुट्टो जैसी प्रमुख नेता की जघन्य हत्या से काम और मुश्किल दिख रहा है। इस प्रतिकूल समय में पाकिस्तान के लोगों को हमारी शुभकामनाएँ, हम आशा करते हैं कि वे इस विकट परिस्थिति से जल्द निकल आएंगे। इस वर्ष ब्रिटेन में टोनी ब्लेयर गए तो उनकी जगह गॉर्डन ब्राउन ने प्रधानमंत्री का पद संभाला। आशा है इनकी अगुवाई में भारत-ब्रिटेन के रिश्ते और सुदृढ़

होंगे। टेनिस में वैसे तो फ़ेडरर की बादशाहत कायम रही लेकिन फ्रेंच ओपन में नडाल का फ़िला वो इस बार भी नहीं भेद पाए। क्रिकेट में 20-20 को छोड़ बांकी संस्करणों में ऑस्ट्रेलिया का परचम छाया रहना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी परन्तु फॉर्मूला-वन में हैमिल्टन - अलॉन्जो की टक्कर में नाटकीय ढंग से रायकिनन बाज़ी मार गए और ड्राइवर्स चैम्पियनशिप पर कब्ज़ा जमाया। विश्व जगत जहाँ आतंकवाद से परेशान रहा वहीं तेल की बढ़ती कीमत ने भी सरकारों की रातों की नींद उड़ाई।

अपने संस्थान में भी बीता वर्ष काफी सुखद बदलाव लेकर आया। नए निदेशक और उनकी नई टीम के द्वारा अनेक नए निर्णय लिए गए, जिनमे से अधिकांश को छात्रों तथा शिक्षकों ने समान रूप से सराहा। संस्थान में छात्रों के बढ़ते बोझ को हल्का करने के लिए एक नया छात्रावास बन कर तैयार है। हालाँकि जिस रफ़्तार से छात्रों की संख्या बढ़ रही है वो अपने आप में सोचने का विषय है, लेकिन अगर संख्या बढ़ रही है तो उसी रफ़्तार से सुविधाएँ भी बढ़नी चाहिये और इस दिशा में यह प्रयास वास्तव में सराहनीय है। पुराने छात्रावासों के जीर्णोद्धार का कार्य भी प्रारम्भ हो चुका है। पिछले साल का अंत प्लेसमेंट सत्र के शुरूआत के साथ हुआ। प्लेसमेंट के पहले दो सत्र कुछ अच्छे, कुछ बुरे और कुछ आश्चर्यजनक परिणामों के साथ समाप्त हुए। आशा है जो लोग पिछले साल “प्लेस” होने से रह गए हैं, नया साल उनके लिए नौकरी लेकर आए।

नए साल में आप सभी लोगों ने “न्यू इयर रिसोल्यूशन” बनाए होंगे जो अवश्य ही काफी विविध होंगे जैसे कि, अच्छे ग्रेड्स लाने का रिसोल्यूशन या फिर (हर साल रिसोल्यूशनस बनाकर पूरा ना कर पाने से परेशान होकर) कोई रिसोल्यूशन ना बनाने का रिसोल्यूशन! हम उम्मीद करते हैं की सबों की सभी इच्छाएँ इसी वर्ष पूरी हों और ये नया साल हमारे जीवन में खुशहाली लेकर आए। नव वर्ष की इन्हीं शुभकामनाओं और अगले महीने फिर मिलने के भरोसे के साथ प्रस्तुत है 2008 का पहला अंक।

क्षितिज : थोड़ा सच थोड़ा झूठ

जहाँ 'क्षितिज' ने कुछ वर्षों के लगातार प्रयास से पूरे भारत के विद्यार्थियों में अपनी एक अलग पहचान स्थापित की है, क्या वो अपने संस्थान के छात्रों पर वही छाप छोड़ पाई है? क्या वो अपने ही संस्थान के छात्रों को आकर्षित करने में असमर्थ रही है?

देखा जाये तो हमारे संस्थान के छात्रों की रचि क्षितिज जैसे तकनीकी व प्रबंधन प्रतियोगिताओं में कम ही रही है। इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में केवल वही छात्र दिखते हैं जिनकी पढ़ाई इन विषयों में होती हो या जो पहले से ही संबंधित सोसाइटियों के सदस्य रहे हों। बाकी लोग तो बस चुपचाप इस फेस्ट के बीत जाने का इंतज़ार करते हैं।

प्रथम वर्ष के छात्रों में 'क्षितिज' के प्रति उत्साह स्वाभाविक है। ये छात्र हर किस्म की प्रतियोगिता में अपना हाथ आजमाते नज़र आते हैं। शायद जे.ई.ई. में हाल में मिली सफलता उन्हें प्रोत्साहित करती है। इन छात्रों को आकर्षित करने के लिए कई प्रतियागिताएँ तैयार की जाती हैं तथा कई 'बिल्ड अप ईवेन्ट्स' उनपर केंद्रित होते हैं। दूसरे वर्ष तक छात्रों का उत्साह ज़रा ठंडा पड़ चुका होता है। यहाँ तक कि अतिथि व्याख्यानों में भी सभागार भर नहीं पाते।

इस बार अभी तक 'क्षितिज' ने कैम्पस के छात्रों के लिए विशेष प्रतियोगिताएँ आयोजित की हैं, जिनमें से कुछ प्रतियोगिताएँ निम्नलिखित हैं

FAIR ISAAC MATH CHALLENGE

यह प्रतियोगिता 'Online Maths Quiz' पर आधारित है। इस प्रतियागिता की सूचना विज्ञापन से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस प्रतियोगिता में ईनाम स्वरूप दो अंतिम वर्षीय छात्रों को FAIR ISAAC कम्पनी के संस्थापन इण्टरव्यू में सीधे बैठने का अवसर तथा अन्य ईनाम जैसे ipod का वादा किया गया था। पर इस प्रतियोगिता के शुरूआत के दिन मुश्किल से कटे। Server down होने के चलते कई छात्र हताश हुए पर कुछ दिन बाद इन त्रुटियों की पूर्ति हो गई। इसके बावजूद भी कई प्रतिभागियों की दूसरे दिन भी server के बीच में ही अटक जाने की शिकायत रही।

SUN CAMPUS AMBASSADOR

इस प्रतियोगिता के सूचना विज्ञापन से छात्रों को प्रतीत हुआ कि यह कम्पनी चुने गए द्तीय वर्षीय छात्रों के लिए summer internship का प्रबंध करेगी। इस बात से उत्साहित होकर बहुत से छात्रों ने इसके लिए अपना नाम दिया किन्तु अन्त में जब चुने हुए कुछ छात्रों का दूरभाषी साक्षात्कार हुआ तो यह पता चला कि कम्पनी बस कैम्पस में अपना दूत चाहती है। अतः पूरा कार्यक्रम मात्र एक प्रचार सामग्री बनकर रह गया तथा कई छात्र निराश हुए।क्षतिज' ने और भी प्रतियोगिताएँ प्रस्तुत की हैं जैसे 'CARBON' और 'ENERGIA'। इन प्रतियोगिताओं के ईनाम स्वरूप internships रखी गई हैं। प्रशिक्षण तथा संस्थापन में 'क्षितिज' की भूमिका का आंकलन हम पाठकों पर छोड़ते हैं

क्या सोचते हैं फच्चे

KGP के एक और शैक्षिक वर्ष का एक sem खत्म हो चुका है। इस पर आवाज़ टीम ने सोचा क्यों ना फच्चों से उनके अनुभवों को जाना जाए। आखिर हर कोई कभी ना कभी तो फच्चा होता ही है। नई आशाएँ, नई उमंगें....लेकिन अंततः सब frust। कुछ दिनों तक टेम्पो दिखाते हैं पर उनकी अव्वल भी जल्दी ही ठिकाने आ जाती है।

अब देखते हैं survey के results

सबसे पहले बात हो जाए प्रथम वर्ष के गर्मागर्म विषय DepC की...इस प्रश्न के उत्तर में कि पहले sem के बाद भी कौनकौन DepC की आशा करते हैं, बड़े ही शानदार रिपणियाँ सामने आई। कुछ छात्र तो हमारे रिपोर्टर्स को मारने दौड़ पड़े। वैसे 22% को अभी भी उम्मीद है, 24% उम्मीद छोड़ चुके हैं, और 39%... इन्हें DepC कभी चाहिए ही नहीं थी, पर हमारे विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार इनमें से कई शुरूआत में DepC प्रत्याशी थे। भई ये तो स्पष्ट है कि kgp की life जल्द ही अव्वल दे देती है पर जिन्हें अव्वल नहीं आयी है उन्हें भी जल्द ही आ जायेगी।

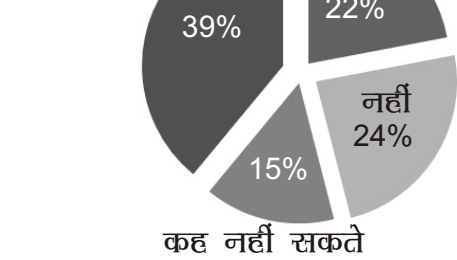
अब बात हो जाए NCC Camp की... 62% ने कहा कि वे दोबारा कभी ऐसी भयानक जगह नहीं जाएंगे। 21% एक बार और जाने की इच्छा रखते हैं। 10% तो हर साल करना चाहते हैं(पता नहीं क्यों... शायद छुट्टियाँ में दोस्तों के साथ रहने का एक बहाना)। 7% तो इतना frust हो चुके हैं कि वे army join करने की सोच रहे हैं।

1st year में शायद ही कोई हो जो TFS (Technology Film Society) का कार्ड लेकर पछताया ना हो। Netaji Auditorium में फ़िल्म देखने जाने के सवाल पर 52% ने साफ़ इंकार कर दिया। 30% महीने में एक बार चले जाते हैं (भई पैसा लगा है) और 18% तो हर बार जाते हैं (चाहे कुछ हो जाए...सारा पैसा वसूल)। हर बार जाने वालों की भी मजबूरी यही है कि पैसा लग चुका है...अब झेलना तो है ही। आवाज़ टीम की ऐसे लोगों से पूरी सहानुभूति है।

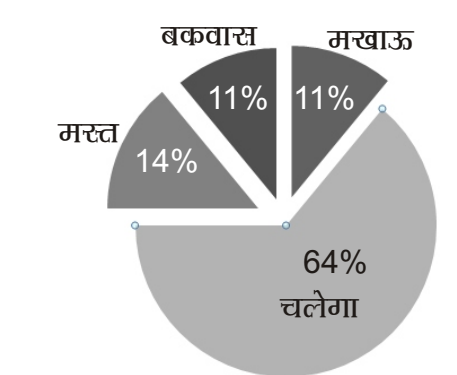
अंत में फच्चों से kgp की image के बारे में पूछा गया। 11% ने कहा kgp is gr8। 64% ने कहा kgp is good। 14% को kgp मस्त लगी आई। 11% के लिए kgp तो दुनिया की सबसे खराब जगहों में से है(भई हमें तो इनकी identity बचानी पड़ रही है। जनता इनका नाम माँग रही है)।

क्या आपकी DepC की उम्मीदें ज़िन्दा है ?

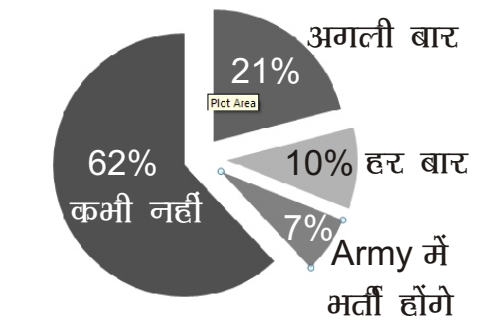
कभी चाह ही नहीं थी



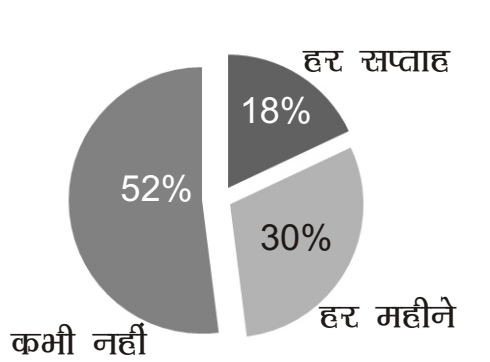
KGP Image ?



NCC Camp फिर जाना चाहेंगे?



TFS जाने की इच्छा ?



“राजनीति में पढ़े-लिखे”

अतिथि - लेख

दोनों महापर्वों की समितियों की चयन प्रक्रिया के बारे में क्या कहना चाहेंगे। 'चमचागिरी' का जो.....।” तभी मैंने बात काटकर कहा “हनुमान जी भगवान् राम का कोई भी काम बिना कोई सवाल पूछे कर दिया करते थे तो उन्हें स्वामिभक्त कहा जाता है। और यहाँ जब जनता seniors की 'हाँ' में बेधड़क 'हाँ' मिलाती है तो तुम 'चमचागिरि' जैसे शब्दों का प्रयोग कर रही हो। यह कैसा इंसाफ़ है?”

अपने कथन के औचित्य के बारे में तो नहीं मालूम, किन्तु 'राम' शब्द के प्रयोग के औचित्य पर विचार करके मैं भयपूर्वक इधर-उधर देखने लगा क्योंकि ट्रेन 'वामपंथियों' के बंगाल में प्रवेश कर चुकी थी। माफ़ करना प्रभु, लेकिन आपने तो चौदह साल का वनवास सहा है तो तुष्टिकरण की यह तलवार भी सह लो।

फ़िर मैंने उसके चेहरे को गौर से देखा, न कोई मुस्कान थी न कोई expression। कृष क्षणों तक प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा करने के बाद मैंने कहा “क्यों? क्या अब भी तुम्हें KGP की राजनीति के बारे में कोई बुराई लगती है?” वो बोली “नहीं, बिल्कुल नहीं, आप जो कह रहे हैं वो बिल्कुल सही है।” यह सुनकर मेरा सीना गर्व से फूल गया। मैंने मन ही मन सोचा “ये तो होना ही था, आखिर 'Hall धर्म' के आगे भला क्या कोई टिक सकता है?” लेकिन मुझे ये समझ नहीं आया कि वह अपने bag से सरदर्द का बाम क्यों निकाल रही थी।

धीरज बैद

प्लेसमेंट ः एक समीक्षा

IIT को ब्रांड वैल्यू दिलाने के पीछे जुड़े कारकों में प्लेसमेंट एक महत्वपूर्ण स्तम्भ रहा है। छात्रों के लिए यह चार वर्षों के अपनी आकांक्षाओं और पर्रिजनों की आशाओं को सार्थक करने का एक पड़ाव होता है। परन्तु IIT KGP में प्लेसमेंट की जब हम अन्य IITs से तुलना करते हैं तो कुछ धारणाएँ हमारे मन में घर कर जाती है। कुछ कमियाँ जो हम यूर्हीं गिनाया करते हैं उनमें से प्रमुख हैं - खड़गपुर की भौगोलिक स्थिति, मेट्रो से इसकी दूरी, विदेशी कम्पनियों पर लगा प्रतिबंध और पर्याप्त infrastructure का अभाव जिसके कारण एक साथ कई कम्पनियाँ recruit नहीं कर पाती हैं।

लेकिन academic सत्र 07-08 मे होने वाला प्लेसमेंट कुछ और ही समा बँधाता प्रतीत हो रहा था। शुरुआत हुई प्रो गौतम सिन्हा की उस घोषणा से, कि अब विदेशी कम्पनियों पर लगा प्रतिबंध हटा दिया गया है। सुन रखा था कि पिछले वर्ष कई कम्पनियों को बस इसी कारण नहीं बुलाया जा सका, सो इस घोषणा से आशाओं का मंज़र चल निकला। लगा जैसे foreign placement “choice” की बात होने वाली है, ”opportunity” की नहीं। लेकिन सबसे बड़ी उम्मीद जगाई थी प्लेसमेंट कमिटी ने। चतुर्थ वर्ष के 5 छात्रों के साथ VP की अगुवाई मे बनी इस टीम के गठन का उद्देश्य पूरी प्रक्रिया में प्लेसमेंट सेल की सहायता करना था। कई घोषणाओं, आश्वासनों और अटकलों के बीच प्लेसमेंट सीज़न नज़दीक आता गया।

अब बात करते हैं इन बदलावों के नतीजों की। यद्यपि कई IITs में यह पहले से लागू था, IIT KGP में प्लेसमेंट नोटिसबोर्ड का ऑनलाईन होना एक क्रांतिकारी कदम रहा। कम्पनियों के बारे में सूचना से लेकर उनके आवेदन और फिर सारी छोटी-बड़ी सूचनाओं के ऑनलाईन होने से पूरी प्रक्रिया का संचालन काफी सुनियोजित रहा। इसको मूर्त रुप पहनाने में पूरी प्लेसमेंट टीम का काम सराहनीय रहा। जगह के अभाव को

दूर करने के लिए पहले चरण में तक्षशिला और विक्रमशिला को उपलब्ध कराया गया और इसके लिए अच्छी नियोजन की गई। इस कारण एक दिन में 6-7 कम्पनियों का parallel recruitment संभव हो सका। छात्रों की सक्रियता हर कदम पर रही और इसके परिणामस्वरूप पहले 12 दिनों में ही 628 छात्रों को नौकरी मिल गई।

पर इस प्लेसमेंट प्रक्रिया के कुछ और



पहलू भी रहे। कई लोगों की नज़र में प्लेसमेंट का चार्म पहले ही दिन खत्म हो गया। अगले दिन से या तो CS/EC के लिए कम्पनियाँ थीं या फिर नये outsourcing firms। ज़्यादातर कम्पनियों ने 10 से अधिक छात्रों को लिया पर कहीं-कहीं ऐसा लगा कि ज़्यादा से ज़्यादा छात्रों को जल्द recruit कराने की कोशिश में quantity को quality के ऊपर तरजीह दी गई। कम्पनियों के क्रम-निर्धारण के पीछे की सोच को समझना मुश्किल रहा। जैसे GE को तीसरे दिन का slot मिला पर Tower Research को कोई slot नहीं मिल सका। इसके समर्थन में तर्क

आवाज़ टीम					
सम्पादक :	अमिनव प्रसाद विकास कुमार पंकज कुमार सोनी सुमित सिंघल नरेश कुमार सोनी	रिपोर्टर :	अमित कुमार आकाशदीप अनुभव प्रताप सिंह	डाज़ाइन टीम :	राजेन्द्र चौधरी वरुण प्रकाश
सह संपादक :	अरुणाभ परिहार कुमार अमिनव श्याम सुंदर	संपादक :	अयान मजुमदार पारस खैतान	संवाददाता :	मनोज कुमार शिरीशा सुब्रमण्यन कपिल गुमास्ता सोनल श्रीवास्तव अनुभा गर्ग दामिनी गुप्ता अंकिता मंगल विक्रम कदम गौरव अग्रवाल
सह संपादक :	सरेन्द्र केसरी	संपादक :	अमिताभ	संपादक :	अमिताभ

जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा

गत वर्ष KGP की प्रमुख घटनाओं में एक घटना रही subsidised rates पर लैपटॉप उपलब्ध होने की। तत्कालीन Vice-President के तहत हुई इस व्यवस्था में KGP जनता को ये आश्वासन दिया गया था कि उनको बाज़ार मूल्य से भी कम दाम में लैपटॉप उपलब्ध कराए जाएंगे। वैसे यह व्यवस्था Vice-President के उन तीन प्रस्तावों में से एक था जो उन्होंने चुनाव के वक्त दिये थे।

परंतु वास्तविकता के धरातल पर देखा जाए तो इस deal से जनता को कुछ खास फायदा नहीं हुआ है। यह बताया गया था कि लैपटॉप का बाज़ार मूल्य लगभग 75000/- रु है जबकि जनता को यह 45000/- में उपलब्ध हो जाएंगे। असलियत तो यह है कि इसका बाज़ार मूल्य कहीं कम लगभग 45000/- से 50000/- रु के बीच है।

इसके अलावा जो लैपटॉप KGP में उपलब्ध हुए हैं उनके साथ Microsoft Windows Vista भी नहीं उपलब्ध की गई। इस वजह से दाम लगभग 5000/- रु और कम होना चाहिए था। मतलब यह की वही लैपटॉप आपको बाज़ार में इसी कीमत पर उपलब्ध हो जाएगा और अगर आप लगभग 2000/- रु और निवेश करें तो काफी बेहतर configuration 47000/- रु में प्राप्त कर सकते हैं। दूसरी बात यह कि शुरूआत में Lenovo R-61 लैपटॉप प्रस्तावित तौर पर सुनिश्चित किए गए थे पर यह प्रतिरूप market में टिक नहीं पाया। अब जब कंपनी ने R-61 का उत्पादन बंद कर दिया है तो उसके स्थान पर KGP में R-60 model उपलब्ध करवाया जा रहा है।

इस घटना के सबसे महत्वपूर्ण पहलू पर अगर नज़र डाली जाए तो

पता चलता है कि वास्तव में deal Lenovo से होने की बजाय Lenovo के व्यापारिक सहयोगी, Wizertech Informatics से हुई है। कम्पनी के चुनाव हेतु विभिन्न कम्पनियों के tender आमंत्रित किए गए थे। HCL ने सबसे कम मूल्य का प्रस्ताव दिया परंतु तत्कालीन V.P. के अनुसार जनता ने HCL के laptops में रुचि नहीं दिखाई। सो उन्होंने Microtech का चयन किया। उनके इस



निर्णय के बाद संस्थान ने खुद को इस व्यवस्था से अलग कर लिया। अन्ततः डील केवल तत्कालीन Gymkhana V.P. के तहत हुई। प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को डील की खबर Gymkhana Introduction के दौरान हुई। तब उन्हें एक सर्वे में यह सवाल पूछा गया कि क्या वे सन्निडाइज्ड दरों पर लैपटॉप लेना चाहते हैं।

रजिस्ट्रेशन अब चुटकियों में

रजिस्ट्रेशन का नाम आते ही दिमाग में लम्बी-लम्बी कतारें, कान पकाने वाला शोर-शराबा, धक्का-मुक्की और सीनियरों का बातों ही बातों में आगे निकल जाना आता था। हम तो

भगवान से यही प्रार्थना करते थे कि बस यह प्रक्रिया शांति से गुजर जाये। सेमेस्टर की शुरूआत ही जब ऐसी हो तो आगे का हाल सोचते ही पसीने छूटने लगते थे। लगता है आखिरकार इस बार भगवान ने हमारी प्रार्थना सुन ही ली।

पूर्वाग्रह से ग्रसित उस सुबह जब रजिस्ट्रेशन के लिए पहुँचे तो हमें लगा कि कहीं गलत जगह तो नहीं आ गये क्योंकि वहाँ तो मीड ही नहीं थी। पता चला कि जगह तो सही है, फिर किसी ने बताया “अरे भाईजान संचारक्रांति के युग में जी रहे हो और वहीं पुराने तरीके - नकद और ड्राफ्ट के माध्यम से फीस जमा करवाते हो?” उन्होंने बताया कि काफ़ी विद्यार्थियों ने फीस एटीएम और इन्टरनेट बैंकिंग के माध्यम से जमा करवा दी है अतः मीड को जुटने का मौका ही नहीं मिल सका। बाकी काम एस.बी.आई. के समर्पित कर्मचारियों ने कर दिया।

हम भगवान को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने हमें इस अग्नि-परीक्षा से इतनी आसानी से पार लगवाया।

खैर! दूसरे मुकाम पर पहुँचे तो वहाँ भी कम मीड मिली। सभी वर्षों के छात्रों को विभाग के अनुसार अलग-अलग समूहों में विभाजित करने से लाइनों की लम्बाई तो स्वतः ही कम हो गई और धक्कामुक्की नामक प्रक्रिया तो ऐसे गायब हो गई हो गई जैसे गधे के सिर से सींग। अंत में इलेक्ट्रॉनिक रजिस्ट्रेशन के लिए पहुँचे तो ऐसा लगा जैसे हमारा ही इंतज़ार हो रहा हो।

अब बारी थी breadth भरने की...। किसी भी सेमेस्टर की शुरूआत में सबसे अधिक चर्चा का विषय यही रहता है कि तुमने कौनसा breadth लिया है... आदि आदि। यहाँ भी संस्थान का लचीलापन देखने को मिला कि हम breadth में अपने विभाग के विषय भी ले सकते हैं जो कि पहले संभव नहीं था। हालांकि संस्थान का breadth भरने के लिए एक सप्ताह का समय देना ठीक है, लेकिन इससे विद्यार्थी और प्रोफेसर दोनों असमंजस में हैं। पहले सप्ताह कक्षा जाने का कोई मतलब ही नहीं बनता। विद्यार्थी यह सोचकर परेशान हैं कि उन्हें कौन सा विषय मिलेगा और प्रोफेसर यह सोचकर उलझन में हैं कि मेरे विषय में कौन-कौन से विद्यार्थी हैं।

हमारी राय में इस साप्ताहिक अवधि को कम कर, कक्षाओं को निर्धारित तारीख के बाद शुरू की जायें तो इस समस्या से निज़ात पाया जा सकता है।



TRS ० एक ईमानदार प्रयास

“हम आगे बढ़ना चाहते हैं। हम IIT Kgp को भारत का रोबोटिक्स का केंद्र बनाना चाहते हैं।”-कुछ ऐसे ही आशावादी शब्द थे हमारे तकनीकी संस्थान की एकमात्र तकनीकी सोसायटी - प्रौद्योगिकी रोबोटिक्स सोसायटी (TRS) के सदस्य आदित्य प्रकाश और गौरव सिंह भदौरिया के। लगभग सात साल के अपने अभी तक के जीवन में इस सोसायटी ने शैशवकाल से अपनी परिपक्वता का सफर इतनी तेज़ गति से तय किया है कि इसके संपूर्ण आकलन को एक लेख में आबद्ध करना अत्यंत कठिन है।

TRS के इतिहास की बात की जाए तो यह सन् 2001 में Robotix नाम से संस्थान की आंतरिक प्रतियोगिता के रूप में आरंभ हुआ था। छात्रों की तकनीक संबंधी ज्ञान को सुधारने के लिए सन् 2002 में Robotix के तकनीकी अंग KRAIG (Kharagpur Robotics and Artificial Intelligence Group) की शुरूआत हुई। इसका प्रमुख उद्देश्य Kgp में रोबोटिक्स को बढ़ावा देना और छात्रों को व्यवहारिक ज्ञान से परिचित कराना था। अगले तीन साल तक Robotix एक छोटे से निकाय की तरह कार्य करता रहा। तत्कालीन सदस्य अनीश रेड्डी और सुमनदीप बैनर्जी की कड़ी मेहनत से Robotix को नए आयाम मिले और सन् 2005 में यह सोसायटी जिमखाना के अंतर्गत प्रौद्योगिकी रोबोटिक्स सोसायटी (TRS) के रूप में स्थापित हुई।

अब हम TRS में होने वाले कार्य व उपलब्धियों की समीक्षा करते हैं। TRS में वर्तमान में 180-200 छात्र हैं जो शैक्षिक व्यस्तता होते हुए भी दिन रात आश्चर्यजनक रूप से वर्ष पर्यन्त कार्य करते रहते हैं। आज Robotix जिसे Kshitij (Kgp का तकनीकी फेस्ट) के अंतर्गत आयोजित कराया जाता है, को समस्त भारत का सबसे बड़ा रोबोटिक्स का फेस्ट कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा। गत वर्ष कुल 550 टीमों (1500 छात्रों) ने Robotix के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। इनमें कुछ टीमों नेपाल से भी थीं तथा विश्व-विख्यात विश्वविद्यालय जैसे स्टैनफोर्ड और प्रिन्स्टन से भी online submission आए थे। Kgp में कई कार्यशालाओं का आयोजन कराने के बाद TRS ने पूर्वी भारत में कोलकाता, रांची, धनबाद, दुर्गा पुर, रोउरकेला और भिलाई में कार्यशालाओं का आयोजन किया। समस्त पूर्वी भारत में रोबोटिक्स का जो स्वरूप आज देखने को मिल रहा है वह काफी हद तक TRS के ही प्रयत्नों का फल है। इधर कुछ महीनों में TRS ने अपने दायरे को असीमित विस्तार देते हुए दिल्ली, जयपुर, नोएडा तथा भोपाल में भी कार्यशालाएँ आयोजित करी। इन कार्यशालाओं की सफलता का अनुमान कोलकाता में आयोजित कार्यशाला से लगाया जा सकता है जिसमें इतनी अधिक संख्या में छात्र उमड़े कि प्रेक्षागृह छोटा पड़ गया तथा बाहर खड़ी जनता ने बेसब्र

उसके अलावा लैपटॉप की कीमत चुकाने के दो तरीके बताए गए थे, एक SBI loan के द्वारा व दूसरा DD के द्वारा। परंतु ऐसा प्रतीत होता है कि जब Institute ने इस सौदे से अपना पल्ला झाड़ लिया तब SBI भी अपने वादे से मुकर गयी। लोगों को ऋण प्राप्त करने में काफी अड़चन आई। कुछ छात्र खुद के बल बूते पर ही ऋण ले सके। तो अन्ततः लोगों को भुगतान DD के द्वारा ही करना पड़ा जो उन्होंने Wizertech Informatics के नाम पर बनवाया था।

एक अलग पहलू देखा जाए तो यह वादा किया गया था कि servicing के लिए KGP में इंजीनियर उपलब्ध करवाया जाएगा। परंतु अब तक ऐसी कोई सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाई है। तत्कालीन V.P. के अनुसार इस सुविधा को उपलब्ध करवाने के हित में institute से इजाज़त नहीं मिल पाई। इसका मतलब यह हुआ कि अगर कोई समस्या होती है तो आपको कोलकाता तक का सफर तय करना पड़ेगा।

हमारा उद्देश्य ना तो गुज़री बातों को कुरेदना है, न ही किसी पर उंगली उठाना। लेकिन ऐसे चुनावी वादे करने की प्रथा न बने ऐसा हम सभी चाहेंगे। डील कितनी साफ है यह कहना अभी मुश्किल है परंतु Wizertech KGP में अपना showroom ज़रूर स्थापित करने की सोच रहा है।

होकर “Kgp हाय!हाय!” के नारे लगाए। वर्तमान में TRS का तकनीकी भाग तीन मुख्य कार्यों में लगा हुआ है -अनुसंधान और विकास, परामर्शी सेवाएँ तथा उत्पाद निर्माण। मुख्य परियोजनाओं में ezBot (ऐसी kit जिससे कोई भी आसानी से स्वाचालित रोबोट का निर्माण कर सकेगा), Robotic Assistant (आपका अपना मशीनी सहायक) तथा Firefighting Bot (अग्निशामक रोबोट) हैं जो अपने अंतिम चरण को जल्दी ही पूरा करके सामने आने वाले हैं। यही नहीं TRS दुबई की एक कंपनी की दो परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है

जिसमें से एक पूरा भी हो चुका है। हैदराबाद की एक कंपनी को TRS उत्पादन तथा संयंत्र संबंधी परामर्श सेवाएँ प्रदान कर रही है। इस वर्ष TRS की ही बदीलत Kgp प्रथम बार रोबोटिक्स की अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता Robocon में भाग लेने के लिए जा रही है।

पर TRS का एक ऐसा भी पहलू है जो सबकी नज़रों से दूर रहता है। यह जानकर दुःख होता है कि इस सोसायटी का सहयोग स्वयं छात्रों के लिए बनाए गया जिमखाना ही नहीं करता। TRS स्थायी निधि का मोहताज़ है। निःसंदेह Alumni से TRS को आर्थिक मदद मिलती है परंतु यह सभी आर्थिक दिक्कतों को हटाने के लिए अपर्याप्त होती है। यह एक कड़वा सत्य है

कि इस वर्ष TRS ने जिमखाना के सामने अपनी आवश्यकता अनुरूप Rs. 2,00,000 का बजट रखा जिसे बड़े ही मनमाने ढंग से Rs. 25,000 यानी मूल बजट का आठवां भाग कर दिया गया। बाद में हमारे द्वारा 'चयनित' छात्र प्रतिनिधियों से मिन्नतें करने पर इसे Rs. 46,000 किया गया। हाल यह है कि TRS Robocon में भाग लेने के लिए पूरी तरह तैयार बैठा है, कुछ कमी है तो आर्थिक सहयोग की। दो साल पहले TRS से वायदा किया गया था कि उन्हें एक अति उन्नत प्रयोगशाला उपलब्ध करायी जाएगी पर अभी तक ठीक से संयंत्र और मूलभूत सुविधाओं का भी इंतज़ाम नहीं हो पाया है। वह तो भला हो तत्कालीन जिमखाना प्रेसीडेंट प्रो.एन एस रघुवंशी तथा रजिस्ट्रार प्रो. डी गुनासेकरन का जिन्होंने TRS की हर मोड़ पर मदद की।

इन सब अड़चनों के होने के बाद भी TRS की तारीफ करनी होगी इस सोसायटी ने कभी हार नहीं मानी। हालांकि संस्थान में रोबोटिक्स पर कुछ विषय पढ़ाए जाते हैं परंतु वे सब मात्र किताबी ज्ञान ही दे पाते हैं। व्यवहारिक ज्ञान की कमी तो निःसंदेह TRS ही दूर करता है। आज TRS को सबसे अधिक आवश्यकता है तो वह है स्थायी निधि तथा प्रशासनिक एवं संकाय सहयोग की। हम आशा करते हैं कि आने वाले दिनों में दृष्ट नई ऊचाइयों को प्राप्त करे।



अत्यंत सफल रही Robotics की शीतकार्यशाला!

प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए TRS ने शीत कार्यशाला का 24 नवंबर से 2 दिसंबर तथा 6-13 दिसंबर के मध्य आयोजित किया जिसे लेकर छात्रों में काफी उत्साह देखा गया। करीब 150 प्रथम वर्ष के छात्रों ने Robotics के कई गुर सीखे तथा कार्यशाला में Mechanical Design एवं Microcontroller coding के विषय में जानकारी प्राप्त की। कार्यशाला के अंत में सभी robots को विक्रमशिला में स्थित TRS Lab में जिमखाना प्रेसीडेंट के समक्ष प्रदर्शित किया गया। उन्होंने इस प्रयास की अत्यंत सराहना की तथा भविष्य में भी ऐसे आयोजनों के लिए छात्रों को प्रोत्साहित किया।

जानिए अपनी सैन्ट्रल लाइब्रेरी को

FACTS

- 1) Asia की सबसे बड़ी डिजिटल library
- 2) 8 करोड़ Journals (print & e-journals) पर प्रति वर्ष
- 3) 2 करोड़ Books (print & e-books) प्रति वर्ष



ही खुलेगी के जवाब में उन्होने बताया कि संस्थान में IDR (Institutional Digital Repository) पद्धति लागू की गई है। यह एक सर्वर है जिसे install करना पड़ेगा । यह एक प्रकार का डिजिटल साफ्टवेयर है।इसके लिए आपको रजिस्टर करना होगा और उसकी सदस्यता प्राप्त करनी होगी।वर्तमान में 100 से अधिक सदस्य यह सदस्यता प्राप्त कर चुके हैं।

डिजिटल लाइब्रेरी की लोकप्रियता के बारे में बात

करने पर उन्होंने बताया कि ये एक ऐसा स्थान है जहाँ पर अध्ययन के आवश्यक समस्त पहलू उपलब्ध हैं जैसे शान्त वातावरण और साफ-सफाई। उन्होंने दावा किया कि एक बार कोई आकर अगर यहाँ अध्ययन करता है तो इस बात की बहुत संभावना है कि वो डिजिटल लाइब्रेरी का नियमित सदस्य बन जाएगा।

जब उनसे पूछा गया कि पुस्तकें अपने नियत स्थान पर नहीं मिलती तो वो थोड़े गम्भीर होकर बोले इस समस्या का कारण आप ही हो। ये एक open access स्थान है और कुछ पुस्तकें कम मात्रा में उपलब्ध हैं तथा एक सदस्य को 5 से अधिक पुस्तकें प्रदान नहीं की जाती। इसलिए वे पुस्तकों को छुपाना शुरू कर देते हैं जिसे सेंट्रल लाइब्रेरी की विशालता के कारण रोकना अत्यंत कठिन हो जाता है। लेकिन छात्रों को इसका ध्यान रखना चाहिए। भविष्य की योजना के बारे में डॉ सूनधार ने बताया कि पूरी लाइब्रेरी में पढ़ाई का बहुत अच्छा माहौल तैयार करने की कोशिश की जा रही है जैसे उसकी सजावट, आरामदायक कुर्سيयाँ, लाइट, वातानुकूलित हवा सब सुविधाएँ सदस्यों को library में आकर्षित करेंगी।नई डिजिटल लाइब्रेरी सभी सुविधाओं से सुसज्जित होगी जैसे light music आरामदायक कुर्सीयाँ जो सदस्यों की एकाग्रचित्ता को काफी बढ़ाएगी।

छात्रों के लिये संदेश

ग्रन्थालय की मर्यादा को बनाए रखें एवं इसके प्रत्येक नियम का शब्दशः पालन करें। और उपलब्ध e-sources का जितना ज्यादा हो सके उपयोग करें क्योंकि ये सब आपके लिये ही बनाया गया है और institute इस पर बहुत पैसा खर्च कर रही है।

हाईटेक लाइब्रेरी

द्वितीयक हो जायेगा मतलब पुस्तक ढूँढ़ने से लेकर issue करवाने तक का सारा काम मशीन द्वारा होगा। यानि एक बटन दबाओ, किताब आपके हाथ में होगी। इस संबंध में प्रबंधन यह भी सोच रहा है कि पूरे ग्रन्थालय को मानव रहित बना दिया जाये यानि केवल रोबोट व मशीन होंगें ग्रन्थालय में। इस पद्धति पर प्रस्तुतः काफ़ी निवेश हो चुका है तथा भविष्य में भी काफ़ी निवेश होगा। श्री मोहापात्र ने बताया कि किताब के पिछले पृष्ठ पर एक टैग microchip होगी जिसे RFID टैग कहते हैं। उस पर किताब से संबंधित सारी सूचना अंकित होगी। इसी microchip की मदद से किताब का जमा करना या लेना संभव होगा। इससे समय-समय पर डाटा भी अपडेट होते रहेंगे। इस मशीन के उपयोग से सब से बड़ी समस्या, अतः किताबों का अपनी जगह पर न पाया जाना दूर होगी मतलब अगर किसी ने किताब छिपा दी हो तो आप उस किताब के नम्बर से मशीन से जान सकते हैं कि किताब कहाँ है। अगर रोबोट पद्धति लागू हो गयी तो आप को किताब वहीं खड़े-खड़े मिल जायेगी।

अभी तक 500 से अधिक किताबों पर RFID टैग लग चुका (25-30 रू प्रति टैग) है और आशा है कि निकट भविष्य में सारी किताबों पर यह टैग लग जायेगा। छात्र इस सुविधा का उपयोग किस प्रकार करेंगे, यह पूछने पर श्री मोहापात्र ने बताया कि एक smart कार्ड होगा (वो library कार्ड भी हो सकता है) जिसके बिना पुस्तकालय में प्रवेश वर्जित होगा और मशीन में अपनी मनचाही किताब का नम्बर डालो और किताब आप के हाथ में होगी। जमा कराने के लिए वहाँ के drop बाक्स में डाल दो मशीन उसे अपने नियत स्थान पर रख देगी।

श्री मोहापात्र ने विश्वास जताया कि IIT के छात्रों को इस पद्धति को समझने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा क्योंकि वो कंप्यूटर से काफ़ी परिचित हैं। उन्होंने बताया कि project लगभग पूरा हो चुका है और वर्तमान निदेशक श्रीमान आचार्य इस पद्धति में काफ़ी रुचि दिखाएँ तो आशा है कि ये शीघ्र ही

CARPEDIEM में लहराया

परचम HTDS ने

साल का यह समय उत्साह एवं रोमांच से भरपूर होता है। SF, क्षितिज तो है ही, कई अन्य संस्थान भी वर्ष की शुरुआत मस्ती से करते हैं। बात हो रही है IIMC के फेस्ट - CARPEDIUM की, जो कि उनका वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव है। 11 जन्वरी से 14 जन्वरी तक चला ये फेस्ट काफी सफल रहा। कइ कालेज़ो से छात्रों का जमघट लग गया।कई प्रतियोगियों ने भाग लिया। NIFT Kolkata, Xaviers, आदि के छात्रों ने भी वहाँ अपनी प्रस्तुति दिखाई।नाटक, गायन-वादन, रॉक शो, सालसा, आदि कई प्रतियोगिताओं ने वहाँ समा बाँधे रखा।

KGP की तरफ से फेस्ट में काफ़ी प्रभावशाली उपस्थिति देखी गयी। छात्रों ने कई प्रतियोगिताओं में भाग लिया जिनमें नुक्कड़ प्रमुख रहा। हमें नाज़ होना चाहिए HTDS पर जिन्होंने एक ही प्रतियोगिता में एक नहीं बल्कि दो स्वर्ण जीतकर हम लोगों का सामर्थ्य सिद्ध किया। 40 प्रथम वर्षीय छात्र और मुट्ठी भर सीनियर सदस्यों के कड़ी मेहनत का मीठा फल उन्हें दो स्वर्ण के रूप में प्राप्त हुआ। इसके अलावा जनता ने कई प्रतियोगिताओं जैसे Face Painting, T-Shirt Painting, Mish-Mash आदि में खूब बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।



नहाने से पहले

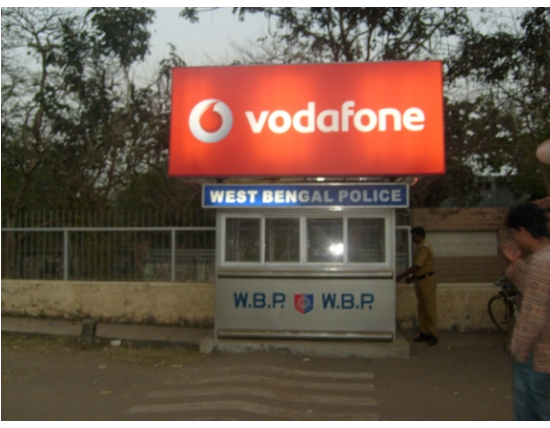
छात्रों को यह सूचित किया जाता है कि वे बिना किसी को बताए नहाने न जाएं। आपके किसी मित्र को अवश्य पता होना चाहिए कि आप नहाने गए हुए हैं और यदि 10 मिनट तक बाहर न निकलें तो मदद के लिए आ जाए क्योंकि हो सकता आप के साथ भी वही हादसा हो जाए जिसके शिकार यहाँ के बहुत से लोग हो चुके हैं। शरीर पर साबुन... पर पानी ख़त्म!! बाथरूम से आने वाली हर चीख का जवाब आवाज़ ने water supply center से पूछा।

पानी की सबसे बड़ी समस्या RP में हो रही है। वहाँ के B block में तो अभी 24 घण्टे पानी की सुविधा है लेकिन अन्य हिस्सों में हमेशा ही पानी की किल्लत रहती है। इस विषय में supply management ने हमें आश्वासन दिलाया कि कुछ दिनों मे C और D block में भी पानी की कमी

को समाप्त कर दिया जायेगा। पाइप लाइन के टूट जाने के कारण ये समस्या पैदा हुई है। परंतु इस दिशा में आवश्यक कदम उठाये जा चुके हैं और कुछ ही दिनों में समस्या का निवारण हो जाने की संभावना है।

MMM और PAN loop में गंदे पानी की हमेशा शिकायत रही है। इसके लिए PAN loop में एक purifier लगाने की योजना कार्य रत है। क्योंकि MMM में पानी सीधे ज़मीन से आता है इसलिए वहाँ ये समस्या आम है लेकिन वहाँ भी purifier लगाया जाएगा।

पानी की समस्या के साथ-साथ जब इस दिशा में काम हो रहा होता है तब भी छात्रों को ही मुसीबत होती है। लेकिन छुट्टियों में मज़दूर नहीं मिलने के कारण सत्र के दौरान ही काम कराना पड़ता है।



VODAFONE प्रस्तुत करता है 'IIT Kharagpur'



इतनी बड़ी चौक ! बढ़िया है!



रानी लक्ष्मीबाई मॉल!



'जिम' 'खाना'



रुकावट के लिए खेद है



मेहमानों की बढ़ती कतार
खुलने जा रहा है नया गेस्ट हाऊस मेरे यार

इस (भूत) बँगले में (अब) कोई रहता है



सहारा को मिली नई छत
लोगों को मिला नया सहारा



Technology कार्टून कोना

